भारत के महान दिगम्बर जैन आचार्य उमास्वामी का तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थ– एक पूर्ण लिपोग्राम

बौद्धिकसम्पदा
कॉपीराइट रिपोर्ट

Report Prepared By

Gurugal
Gurugal Research International LLP
गुरुगल

Directors
Dr. Amit Jain, Adv. Reenu Jain
Website - gurugal.in
Email- gurugalllp@gmail.com
Date- 13/02/2024

परिचय

गुरूगुल रिसर्च इण्टरनेशनल एलएलपी, लिपोग्राम (वर्णलोप) पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करती है। इस विषय पर दुनिया में पहली बार भारत देश में कोई शोध हुआ है। जिसका विषय है **''भारत के महान दिगम्बर जैन आचार्य उमास्वामी का तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थ– एक पूर्ण लिपोग्राम''** इस रिसर्च को भारत के महान दिगम्बर जैन संत **प्रज्ञाश्रमण बालयोगी मुनिराज भगवंत अमितसागर जी महाराज** के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में डॉ. अमित जैन ने सफलतापूर्वक पूर्ण किया है। यह शोध कार्य बौद्धिक सम्पदा के अन्तर्गत भारत सरकार ने कॉपीराइट किया है। जिसका रिकार्ड इस प्रकार है।

https://www.copyright.gov.in/CopyrightROC_Details.aspx?DiaryNo=34735/2023-CO/L&RocNo=L-143355/2024

Copyright Registration of Certificate Details:

1.	Diary Number	:	34735/2023-CO/L
2.	Research Director	:	Pragyashraman Muni Amitsagar
3.	Author Name	:	Dr Amit Jain
4.	Title of the Work	:	Bharat Ke Mahan Digambar Jain Acharya Umaswami ka Tatwarthsutra Granth – Ek Poorn Lipogram
5.	Registration Number	:	L-143355/2024
6.	Status	:	Registered

शोध का विषय–

भारत के महान दिगम्बर जैन आचार्य उमास्वामी का तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थ– एक पूर्ण लिपोग्राम

भारत में लिपोग्राम का लेखन–

पूर्ण लिपोग्राम का सर्वप्रथम लेखन **भारत देश के महान दिगम्बर जैनाचार्य उमास्वामी** ने किया था। **दूसरी शताब्दी में** उन्होंने अपनी सर्वमान्य रचना **तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र)** वर्णमाला के **फ और झ** वर्णों का बिना प्रयोग किये पूर्ण की।

*वर्णलोप = Lipography, Lipogram

उन्होंने दूसरी शताब्दी में ही पूर्ण लिपोग्राम (वर्णलोप) कला से भारत देश को परिचित करवा दिया था, किन्तु शेष दुनिया में वर्तमान में भी लिपोग्राम के विषय में आधा–अधूरा और भ्रमित ज्ञान ही प्रचलित है। उसका कारण है कि वर्णलोप एक कठिन कला है, जिसको समझने के लिए सर्वप्रथम संस्कृत भाषा, व्याकरण, वर्ण व शब्द के भेद–प्रभेद का पूर्ण ज्ञान आवश्यक है। इसके अभाव में लिपोग्राफी (वर्णलोप) करना असम्भव है। लिपोग्राफी असाधारण लेखन की कला है। अतः यह किसी अल्पज्ञानी का काम नहीं हैं। प्रस्तुत शोध/संकलन **डॉ. अमित जैन** ने **प्रज्ञाश्रमण मुनि अमितसागर** के दिशा निर्देशन एवं **तत्त्वार्थसूत्र** पर उनके द्वारा लिखी गई टीका **''अनुत्तर जिज्ञासा''** की प्रस्तावना में दिए गए प्रमाणों के आधार पर किया है।

वर्णलोप की चुनौतियाँ

1. किसी रचना से वर्ण अथवा वर्णों के समूह का लोप, उस रचना को ज्यादा प्रभावी बनाने के उद्देश्य से किया जाता है। वर्णलोप भूल तो बिल्कुल नहीं है क्योंकि भूल तो किसी भी रचना को निष्प्रभावी बनाकर, उस पर प्रश्नचिन्ह लगा देती है।

2. लेखक अपनी रचना को विशेष श्रेणी में रखने के उद्देश्य से, कुछ ऐसे वर्ण उससे अलग रखता है, जिनमें अंश मात्र भी ऐसी संभावना होती है कि वे रचनाकार के उद्देश्य में बाधक बनेंगे। लिपोग्राम ग्रंथ के लेखन में वर्ण और शब्द की प्रकृति व व्याकरण का पर्याप्त ज्ञान होना पहली शर्त है।

3. भूल से अथवा जान–बूझकर किसी ग्रंथ से ग्रंथकार ने यदि किसी सार्थक वर्ण या वर्णों के समूह का लोप किया है, तो ऐसे ग्रंथ लिपोग्राम की श्रेणी में रखने लायक नहीं हो सकते।

4. शोध से ज्ञात होता है कि **वर्णलोप** किसी ग्रंथ को विशेष बनाने के उद्देश्य से किया जाता है अर्थात् **लिपोग्राम** विशेषता प्रकट करता है।

उपरोक्त कारण स्पष्ट करते हैं कि वर्णलोप पूर्ण रूप से वैज्ञानिक अनुसंधान और शोध पर आधारित है। यह स्वेच्छाचार का विषय नहीं है।

वर्णलोप का महत्व–

वर्णलोप किसी ग्रंथ को धरातल से उठाकर शिखर पर विराजमान कर सकता है। वर्णलोप– लाघव (लघु) का प्रतीक है, इसके प्रयोग से भाषण को सार में परवर्तित किया जा सकता है। वर्णलोप; लेखकों, साहित्यकारों, वक्ताओं, शोधार्थियों, विद्वानों की सफलता का सूचक है। कोई भी रचना; सुन्दर भाषाशैली, प्रयुक्त किए गए वर्णों और शब्दों के चयन के आधार पर ही संसार में मान्यता और श्रेष्ठता प्राप्त करती है। (लेखन में फूहड़ता; वर्ण और शब्दों के हेर–फेर से विराजमान होती है) वर्णलोप एक ऐसी कला है, जिसका प्रयोग करके लेखक सीमित शब्दों में अपने भाव को जनमानस के बीच प्रेषित कर सकता है। वर्णलोप के माध्यम से अनावश्यक और अप्रासंगिक शब्द जब किसी रचना में प्रयोग ही नहीं होते हैं तो यह रचना ज्यादा प्रभावी बनकर उभरती है। **श्रेष्ठ रचनाएँ बार–बार के अध्ययन में नवीन आनन्द और पाठकों को नई जीवन दृष्टि देती हैं क्योंकि इनकी विषय वस्तु सरलता से समझ आ जाती है।**

वर्णलोप पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण

जिस प्रकार भारत में दूसरी शताब्दी से शुरू होने वाला वर्णलोप सिद्धान्त अठारहवीं शताब्दी तक निरन्तर प्रयोग हुआ है, उससे इसके प्रभाव का अंदाजा लगाया जा सकता है। **भारत के महान दिगम्बर जैन आचार्यों** ने जिन ग्रन्थों/स्तोत्र में वर्णलोप का प्रयोग किया है, वे सभी सर्वमान्य बन गए हैं।

शास्त्री, पण्डित, वैज्ञानिक, विद्याधर ये सभी शब्द पर्यायवाची हैं। दिगम्बर जैन आचार्य महान वैज्ञानिक होते हैं क्योंकि वे व्याकरण, न्यायशास्त्र, आगम के ज्ञाता होते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वर्ण और शब्दों के अर्थ, भेद–प्रभेद, प्रभाव, बारम्बारता की जाँच करने पर पाया जाता है कि शब्द में तरंगें, ध्वनि तथा गति होती है। इसके अतिरिक्त शब्द में स्पर्श, रस, गन्ध और रंग आदि गुण पाए जाते हैं। अतः शास्त्र लेखन के लिए सार्थक तथा सजातीय शब्द चुने जाते हैं और जिन वर्णों से आक्रामक स्वभाव वाले शब्दों का निर्माण होता है, उन वर्णों का लोप कर दिया जाता है। यह पूरा वैज्ञानिक दृष्टिकोण दूसरी शताब्दी में अर्थात् 1900 वर्ष पूर्व की **आचार्य उमास्वामी** की सर्वमान्य रचना **तत्त्वार्थसूत्र** में उपलब्ध हैं।

निष्कर्ष–

भाषा–व्याकरण के पूर्ण ज्ञान के बिना लिपोग्राम प्रणाली अकल्पनीय है। जिनके पास यह उच्च ज्ञान नहीं है, वे लिपोग्राम को खारिज कर सकते हैं। दूसरी ओर, कोई छोटी कविता, पैराग्राफ, रचना अथवा लेख, लिपोग्राम नहीं हो सकते, क्योंकि आकार छोटे होने के कारण उनमें वर्णमाला के सभी वर्णों का प्रयोग संभव नहीं है अर्थात् बिना विचार किए भी छोटी रचनाओं में वर्णलोप संभव है, जिससे रचनाकार भी अंत तक अनभिज्ञ रहता है। शोध से स्पष्ट है कि अनजाने में अथवा रचना के छोटे आकार के कारण होने वाले वर्णलोप को लिपोग्राम का आधार नहीं माना जा सकता है, अतः जब पूरे ग्रन्थ में ही किसी वर्ण अथवा वर्णों के समूह का लोप हुआ है तभी वह लिपोग्राम की श्रेणी में रखने लायक है, साथ ही वर्णलोप का कुछ उद्देश्य भी होना चाहिए। लिपोग्राम वास्तव में किसी ग्रन्थ के उस सौन्दर्य भाव को प्रकट करता है, जहाँ भाषा–व्याकरण के किसी महान ज्ञानी ने दर्शाया है कि वह तल से शिखर (आदि से अंत) तक के समस्त भाषा–व्याकरण का प्रयोग करना भली–भाँति जानता है। **भारत के महान दिगम्बर जैन आचार्य उमास्वामी** ने अपनी कालजयी कृति **तत्त्वार्थसूत्र** में अपना भाषा–व्याकरण का ज्ञान; उत्तम विधि से प्रयोग कर इसे लिपोग्राम ग्रन्थ बनाया है।

विश्लेषण के मुख्य बिन्दु

1. उपरोक्त शोध पत्र का प्रमुख आधार **आचार्य उमास्वामी** द्वारा दूसरी शताब्दी की रचना **तत्त्वार्थसूत्र** ग्रन्थ एवं **अनुत्तर जिज्ञासा** नामक हिन्दी टीका है, जिसके रचनाकार **प्रज्ञाश्रमण मुनि अमितसागर** हैं। शोध की सफलता में **अनुत्तर जिज्ञासा** का वृहद् योगदान है।

2. शोध में वर्णलोप से सम्बन्धित तथ्यों को प्रकट करने के साथ–साथ वर्णलोप से सम्बन्धित भ्रम को भी दूर किया गया है। यह शोध वर्णलोप सम्बन्धी शंकाओं के समाधान की कुंजी है।

3. शोध निर्देशक और शोधकर्ता के अनुसार उपरोक्त शोध पूरे विश्व में, भविष्य के लेखकों

के लेखन कार्य की दिशा तय करेगा। इसके माध्यम से लेखक अपनी भाषाशैली को सर्वजनहिताय बना सकेंगे।

4. यह शोध भारत देश की धरोहर है तथा भारत के महान दिगम्बर जैनाचार्यों को समर्पित है।

सिफारिशें

वर्णलोप पर किए गए वैज्ञानिक अनुसंधान में हमने पाया कि यह भाषा को विकसित करने की कला है। वर्णलोप अपूर्व एवं असाधारण इसलिए है क्योंकि इसको करने वाला व्युत्पत्ति शास्त्र, व्याकरण का पूर्ण ज्ञानी होना चाहिए।

भारत के महान दिगम्बर जैनाचार्यों ने केवल वर्णलोप का प्रयोग ही नहीं किया है, बल्कि इससे सम्बन्धित सिद्धान्तों को भी समझाया है। भाषा–विज्ञानी, साहित्यकार, रचनाकार, वर्णलोप को समझकर लेखन कार्य करें। दुनिया के सभी देशों को इस अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की प्रक्रिया को अवश्य अपनाना चाहिए।

व्याकरण का विशिष्ट ज्ञान न होना वर्तमान लेखक समुदाय की सबसे बड़ी कमजोरी है। वर्णलोप के सिद्धान्त को अपनाने से उनकी न केवल यह कमजोरी दूर होगी, बल्कि उनकी रचनाऐं/ग्रन्थ सर्वमान्य बन सकते हैं।

वर्णलोप वास्तव में विज्ञान, विषय, प्रक्रिया, ज्ञान, तकनीक, विद्या, कौशल, हुनर, उस्तादी और विद्या विभाग है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वर्णलोप का प्रतिपादन होना चाहिए। शोध निर्देशक और शोधकर्ता का यही भाव है।

शोध निर्देशक का परिचय

प्रज्ञाश्रमण मुनि अमितसागर

पूज्य गुरूदेव ने अल्पआयु में ही मुनियों की सेवा का भाव किया था। वे संसार से उदासीन हुए और मुनियों की सेवा में लग गऐ। बीसवीं शताब्दी के प्रथम **चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर** जी के **तृतीय पट्टाधीश आचार्यसम्राट धर्मसागर** जी से सन् 1984 में उनकी मुनि दीक्षा सम्पन्न हुई। उनकी दीक्षा के अब 40 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। इतने लम्बे

समय अंतराल में वे **शब्दागम–व्याकरण, तर्कागम–न्यायशास्त्र, परमागम–सिद्धान्त** के विशेषज्ञ अर्थात् त्रैविद्य के रूप में कई महान ग्रन्थों की रचना, लेखन, सम्पादन तथा शोधन कर चुके हैं। आपके सान्निध्य में कई बुजुर्ग पुरूष मुनि दीक्षा धारण कर सुखपूर्वक समाधिस्थ हुए हैं। समाधिस्थों की सेवा करने के लिए आप पूरे भारत देश में प्रसिद्ध हैं। उच्च श्रेणी के विद्वान त्यागीव्रती तथा श्रावक आपका सान्निध्य पाकर धन्य हो जाते हैं। आपकी धर्म सभा में सभी का सम्मान और बहुमान किया जाता है। आपने अथाह श्रम करके पूरे देश से दुर्लभतम धर्म ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ, ताड़पत्रों पर लिखित ग्रन्थ, ताम्र पत्रों पर लिखित ग्रन्थ, स्वर्ण अक्षर, रजत अक्षर आदि से लिखित ग्रन्थों का संकलन कर श्री धर्मश्रुत शोध संस्थान स्थापित श्री दिगम्बर जैन रत्नत्रय मन्दिर, नसिया जी, कोटला रोड़ फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत में स्थापित किए हैं। इस संस्थान के निर्माण के प्रेरणा श्रोत भी आप हैं। खोज, शोध, शिक्षा, साहित्य के लिए आप हमेशा आशीर्वाद देते हैं। **प्रस्तुत शोध पत्र आपके निर्देशन एवं मार्गदर्शन में पूर्ण हुआ है।**

शोधकर्ता का परिचय

डॉ. अमित जैन

Education :–

M.com. Ph.D, MAT, MSW, LLB

Academic Carrier :–

Professor of Commerce 2007 to 2018, Ch. Charan singh P.G. College, Heonra

Director – Amit Bal Bhawan 2009 to at present

Director – Gurugal Research International LLP at present

Director – Chernobyl Research LLP at present

Editor-in-chief- 11 Journals since 2009 to at present

Life Member :-

1. Indian Red Cross Society (UP State), Lucknow.
2. Youth Hostel Association of India, New Delhi.
3. Indian Sociological Society
4. Indian Economic Association
5. Unesco, CUCAI

Specialization :-

Commerce, Management, Social Work, Law, Research, Innovations, Editing

Copyright :- 1 (one)

Prize :-

1St Prize Oct. 2008 by Pratiyogita Darpan (Upkar Prakashan)

Resource Person :-

1- Chief Guest Arihant Trust (Mewar University, Ghaziabad) Sep., 2014.

2- Chair, National Seminar, Nation (PG) College, Bhongaon, Mainpuri (UP). 23-24 Dec, 2014.

3- Chair, National Seminar, Udaipur School of Social Work (Raj.) 27-28, Feb. 2015.

4- Chair, India Against Rape Movement 4 times, Firozabad, Agra, Mathura, Udaipur

5- Resource Person, Dau Dayal P.G. College, Firozabad in National Seminar 2021

6- Resource Person, Dental Camp, Dau Dayal P.G. College, Firozabad, 2023

Research Work & Acheivements :-

Work to Pratiyogita Darpan

Date	Pratiyogita Number	Subject	Position
12 May, 2008	349	Samaj Mai Nari Ki Bhumika	Shreshth
12 June, 2008	350	Vaishweekaran Mai Computer Ki Bhumika	Shreshth
15, July, 2008	351	Bhartiya Rajniti Mai Kshtravad	3rd Position
14, Aug., 2008	352	Sampradayikta Ke Dushprinaam aur Nirakaran	Shreshth
11, Sep. 2008	353	Aatankwad – Ek Jatil Samsya	1st Position
14, Oct. 2008	354	Bharat Aur Uske Padosi Rashtra	Shreshth
19, Dec. 2008	356	Bharat Aur Pashchim Ashia	Shreshth

National & International Seminar, Conference & Workshop:-

54, Attended in India since 2006-2019

Webinars:-

183, Attended in India since 2020-2021

International Webinars:-

14, Attended since 2020-2022

Organizing Secretary:-

6, in India collaboration with PG Colleges

Convener:-

4, National Workshop – India Against Rape – Mathura, Firozabad, Udaipur, Agra

Journals Editorials:-

38, Written

उपरोक्त शोध को पूरा पढ़ने के लिए यहाँ क्लिक करें।.....

COMPANY PROFILE DESIGN

Gurugal
Gurugal Research International LLP
गुरुगल